SHIV OM SAI PRAKASHAN

95/3 Vallabh Nagar, Indore-03 (M.P.) India T: +91 731 4225754, 2530217

' काशी मरणान्मुक्ति ' की महिमा महामहिम तक

17 मई 2012, नई दिल्ली, अध्यात्म एवं दर्शन के द्वारा कई रहस्यों को उघाडती पुस्तक काशी मरणान्मुक्ति के लेखक श्री मनोज ठक्कर को भारत की पहली महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने राष्ट्रपति भवन में आमंत्रित किया| इस अवसर पर महामहिम का कहना था कि अध्यात्मिक ऊर्जा ही देश को संचारित करती है और पुस्तक काशी मरणान्मुक्ति अध्यात्म को गहरे से दर्शाती है| युनाईटेड वर्क्स कोर्पोरेशन (यु डब्ल्यू सी) सदस्यों की सराहना करते हुए उन्होंने यह भी कहा की युवा पीढ़ी ही देश को आगे ला सकती है| इस पुस्तक के विक्रय से प्राप्त राशि को सामाजिक उपयोग में लेने की भावना का भी उन्होंने सम्मान किया|

पुस्तक के रचनाकार मनोज ठक्कर एवं रश्मि छाजेड़ (गादिया) द्वारा इस गूढ विषय पर इतने अधिकार से लिखना गहन पठन एवं अनुभूतियों पर ही संभव है| विषय गूढ होने पर भी रोचक एवं ज्ञानवर्धक है| 'काशी मरणान्मुक्ति' एक दार्शनिक उपन्यास है जो नायक 'महामृणगंम' (महा), एक चांडाल के जीवन पर आधारित है, जो सदगुरु की खोज करते हुए अध्यात्म के चरम को पा, पशु से पशुपति अर्थात शिव हो जाता है|

मनोज ठक्कर जी एक अनूठे समाज सेवक है जो अपने दिन का अधिकतम समय युवाओं को मार्गदर्शन देने एवं गृहस्थ लोगों की समस्याओं का समाधान देने में व्यतीत करते है| उनका मानना है कि आज के युवा को सुनना एवं उनको सुनकर दिशानिर्देश देना बहुत आवश्यक और ये उनसे दोस्ती के माध्यम और उनकी भाषा में उन्हें समझाने पर ही हो सकता है| श्री ठक्कर विज्ञान में स्नातकोत्तर कि शिक्षा पूर्ण करने के बाद २७ भिन्न विषयों का अध्ययन किया एवं अर्थशास्त्र पढ़ाना प्रारम्भ किया| उन्होंने अपने छात्रों को हमेशा अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा को सृजनात्मकता की ओर प्रेषित करने के लिए प्रेरित किया| उनका विश्वास है कि युवा समाज में आमूल परिवर्तन ला सकता है और उनका यही विश्वास उनके छात्रों के लिए आत्मविश्वास बन गया| उनके छात्र कब शिष्य बन गए एवं वे गुरु इसका आभास नहीं हुआ| यु डब्ल्यू सी एक व्यवसयिक संस्थान है जो मनोज ठक्कर जी के शिष्यों द्वारा स्थापित की गई है|

प्रकाशक वर्ग एवं लेखक का पुस्तक के लिए एक सुविचार यह भी है कि इस पुस्तक के विक्रय द्वारा प्राप्त राशि सहयोग राशि के रूप में एकत्रित की जा रही है एवं शिव ॐ साई ट्रस्ट द्वारा इसका उपयोग मानसिक विकलांग बच्चों के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर की आवास संस्थान हेतु किया जाएगा| इस चरण में ट्रस्ट ने इंदौर में एक जमीन खरीद आगे की तयारी शुरू कर दी है| लेखक द्वय की मान्यता है कि यह पुस्तक एक गुरु प्रसाद है एवं वे मात्र माध्यम है, इसके सन्देश और इसके द्वारा प्राप्त राशि दोनों ही जन साधारण के विकास के लिए किया जाना चाहिए|

सेवा में,

श्रीमान संपादक

_______________.